स्पष्टीकरण है कि खुले, स्वतन्त्र और अनुकूल पर्यावरण में विभिन्न विचार अभिव्यक्त होते हैं और भिन्न-भिन्न क्रियाएं सम्पादित होती हैं जो नवसृजन (सृजनात्मकता) को जन्म देती हैं; इसके विपरीत बन्द समाज में इस शक्ति का विकास नहीं होता।

3. सृजनात्मकता का मनोविश्लेषण सिद्धान्त :- (Psycho Analysis Theory of Creativity)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मनोविश्लेषणवाद के संस्थापक फ्रायड (Freud) ने किया है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति में सृजनात्मकता उसके अचेतन मन में संचित अतृप्त इच्छाओं की अभिव्यक्ति के कारण आती है। इनका तर्क है कि व्यक्ति की अतृप्त इच्छाओं का शोधन करने से वे सृजनात्मक लक्ष्यों की ओर मुड़ जाती हैं।

4. साहचर्यवाद का सिद्धान्त (Associationism Theory)

इसके अन्तर्गत हम परस्पर तत्वों में सम्बन्ध स्थापित करते हैं। यह सम्बन्ध वस्तुओं में साहचर्य द्वारा प्राप्त होते हैं, जिनमें कि संयोग व प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है। इन संयोगों और प्रणालियों का पुनर्गठन करना ही सृजनात्मकता है। इसके द्वारा नवीनता या मौलिकता उत्पन्न करके सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है। रिबोट (Ribot) के अनुसार— "सृजनात्मकता संयोगों (Bonds) का पुनर्गठन है। आविष्करण प्रकृति (Serendipity), समानता (Similarity) तथा मध्यस्थता (Mediation) से साहचर्य सृजनात्मकता के लिए उत्तरदायी होती है।" मेडनिक (Mednik) के अनुसार— "नवीन संगठन के तत्वों में जितनी घनिष्ठता होगी उतनी ही सघन सृजनात्मकता प्रक्रिया होगी।

5. अर्द्धगोलों का सिद्धान्त (Hemisphere Theory):-

इस सिद्धान्त के अनुसार सृजनात्मक कार्य व्यक्ति के मस्तिष्क की संरचना के दोनों अर्द्धगोलों में मध्य अन्तःक्रिया के फलस्वरूप सम्पन्न होते हैं। इस सिद्धान्त का आधार जीवविज्ञान के वे तथ्य हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि सृजनात्मकता मस्तिष्क के दाहिने अर्द्धगोल के प्रभुत्व के कारण होती है और विचार एवं तर्क बायीं ओर के अर्द्धगोल के प्रभुत्व के कारण आते हैं। इस सिद्धान्त की पुष्टि क्लार्क (Clark), किटेनो (Kitano), और किर्बी (Kirby) ने की।

Scanned with CamScanner

6. पूर्णाकार/ अन्तर्दृष्टिवाद /गेस्टाल्ट (Gestalt/Insight Theory):-

इस सिद्धान्त के अनुसार समस्त समस्या प्रधान कार्यों का हल अन्तर्दृष्टि या सूझ का प्रतिफल होता है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादकों ने सृजनात्मकता का आधार अन्तर्दृष्टि बताया है। इसके द्वारा यदि मस्तिष्क में कोई नई बात या विचार आता है, जिसके कारण मौलिक कार्य हो तो उसे सृजनात्मकता कहा जायेगा।

7. अस्तित्ववाद का सिद्धान्त (Existentialism Theory):-

यह सिद्धान्त अन्तर्दृष्टि से अधिक निकट है। अस्तित्ववाद मिलन तथा सामंजस्य में विश्वास करता है। इसके अनुसार सृजनात्मकता एक प्रक्रिया एवं कार्य, विशेष रूप से व्यक्ति और उसके जगत को जोड़ने की प्रक्रिया है। स्केचटल (Schachtal) ने आत्मकेन्द्रित (Autocentric) तथा अपकेन्द्रित (Allocentric) अथवा वस्तुकेन्द्रित रूप से सृजनात्मकता की धारणा की है। आत्मकेन्द्रित बचपन में तथा अपकेन्द्रितता या वस्तुकेन्द्रितता वयस्क होने पर प्रकट होती है। अपकेन्द्रितता की स्थिति में ही सृजनात्मक प्रक्रिया होती है।

⑧ स्तर का सिद्धान्त (Level Theory):-

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक टेलर (Tayler) ने किया है। उन्होंने सृजनात्मकता की धारणा पांच स्तरों के रूप में की है। इनके अनुसार कोई व्यक्ति उस मात्रा में ही सृजनशील होता है जिस स्तर तक उसमें पहुँचने की क्षमता होती है। ये स्तर निम्नलिखित हैं:-

(i) अभिव्यक्ति सृजनशीलता (Expressive Creativity):-

यह वह स्तर है जिस पर कोई व्यक्ति अपने विचार अबाध गति से प्रकट करता है इन विचारों का सम्बन्ध मौलिकता से हो यह आवश्यक नहीं होता। टेलर के अनुसार यह सबसे निम्न स्तर की सृजनशीलता होती है।

(ii) उत्पादन सृजनात्मकता (Productive Creativity):-

इस स्तर पर व्यक्ति कुछ नवीन वस्तु का उत्पादन करता है। यह उत्पादन, विचार, क्रिया या वस्तु किसी भी रूप में हो सकता है। टेलर के अनुसार यह निम्न से ऊपर की ओर दूसरे स्तर की सृजनात्मकता होती है।

(iii) नवपरिवर्तित सृजनात्मकता (Innovative Creativity):- इस स्तर पर व्यक्ति पुराने विचार, क्रिया अथवा वस्तु को ध्यान आकर्षित करने वाले किसी नये रूप में प्रस्तुत करता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(iv) खोजपूर्ण/अन्वेषण सृजनात्मकता (Inventive Creativity):-

इस स्तर पर व्यक्ति अपने अमूर्त चिन्तन के द्वारा नवीन विचारों या सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है।

(v) उच्चतम स्तर की सृजनात्मकता (Highest Level of Creativity):-

उम्र के अनुसार इस स्तर पहुँचने वाले व्यक्ति कला, साहित्य और विज्ञान आदि क्षेत्रों में आदर्श रचनाओं एवं सिद्धान्तों का सृजन करते हैं।

9. संकुलवाद (Trait Theory):-

यह वाद मनोविश्लेषण, साहचर्य, गेस्टाल्ट, अस्तित्ववाद तथा अन्तर्वैयक्तिकवाद से भिन्न है। संकुल व्यक्ति की विशेषताएँ होती हैं एवं इन्हें वैयक्तिक भिन्नता द्वारा समझा जा सकता है। इसके माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है। गिलफोर्ड महोदय ने सृजनात्मकता से सम्बन्धित संकुल निम्नलिखित रूप में बतलाये हैं-

(i) समस्या के प्रति संवेदना।

(ii) चिन्तन की सातत्यता, शब्द सातत्य, साहचर्य सातत्य, अभिव्यक्ति सातत्य, वैचारिकी सातत्य, चिन्तन में लोच, चित्र तथा विचार, चित्रग्रहण अनुकूलन, मौलिकता व वैचारिक विस्तार हो।

10. ईश्वर प्रदत्त या दैवीय प्रेरणा का सिद्धान्त :-
(God-given Gift or Devine Inspiration)

इस प्राचीन सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति के लिए सृजनात्मकता ईश्वर प्रदत्त या दैवीय प्रेरणा है। जो व्यक्ति ईश्वर के प्रति जितनी आस्था रखता है, जितनी भक्ति व प्रेम करता है तथा जितनी शक्ति में विश्वास करता है। वह व्यक्ति उतना ही अधिक सृजनशील होता है। वर्तमान युग में कोई भी वैज्ञानिक इस सिद्धान्त का स्वीकार नहीं करता।

Scanned with CamScanner